कक्षा शिक्षण में बातचीत है महत्त्वपूर्ण

अरविन्द कुमार सिंह

कक्षा में बच्चों से बातचीत के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन शिक्षक बच्चों से बातचीत की शुरुआत कैसे करें; विद्यालय व कक्षा की समय सारिणी में इसके लिए जगह कहाँ और कैसे बने; कक्षा में इसके लिए मौक़े कैसे बनें; और इस बातचीत की प्रकृति कैसी हो? इस लेख में लेखक ने इन सभी प्रश्नों पर अपने अनुभव-आधारित विचार प्रस्तुत किए हैं।

> शुरुआती कक्षाओं में बच्चों के साथ बातचीत के लम्बे सत्रों का आयोजन करने से उनकी समस्याओं के बारे में भी पता चलता है।

चित्र 1 : कक्षा की गतिविधियों में सारे विद्यार्थियों को शामिल करना ज़रूरी है

पिछले दिनों बाल पत्रिका *साइकिल* में एक कहानी पढ़ी– 'रोबी'। रोबी जब छठवीं में पहुँचा तो उसे ज़ोर का झटका लगा। झटके का नाम था, 'इंग्लिश मीडियम स्कूल'। पता नहीं, रोबी के पिता को अँग्रेज़ी का ऐसा क्या चस्का लगा कि उन्होंने रोबी को, जो अब तक बांग्ला मीडियम स्कूल में पढ़ता था, अचानक अँग्रेज़ी मीडियम में भिजवा दिया। रोबी को अँग्रेज़ी का ए, बी, सी, डी भी नहीं आता था। पहले ही हफ़्ते अँग्रेज़ी के सर ने रोबी से कहा, "इतने बड़े हो गए और अभी तक ए, बी, सी, डी नहीं आती? कल तक ए, बी, सी, डी रटकर आना।"

अगले दिन सर ने रोबी से पूछा, "ए, बी, सी, डी याद करके आए?"

रोबी बोला, "जी सर!"

मास्टरजी बोले, "तो फिर सुनाओ।"

रोबी ने सुनाना शुरू किया, "ए, एफ़, ज़ेड, एक्स, बी, ई, जी, एस, टी..."

मास्टरजी ने रोका, "रुको, रुको! ऐसे कैसे याद किया है? ए, बी, सी, डी, ई, एफ़, जी, एच, आई..., ऐसे सुनाओ।"

रोबी बोला, "क्यों सर, ऐसे ही क्यों? ए के बाद एस क्यों नहीं आ सकता, बी ही क्यों आता है?"

मास्टरजी तमतमा गए। बोले, "क्योंकि ऐसे ही होता है।"

रोबी बोला, "हर चीज़ का मतलब होता है। आप इसका मतलब समझा दीजिए, मैं वैसे ही याद कर लूँगा जैसे आपने बताया है।"

न तो मास्टरजी ए के बाद बी ही क्यों आता है और सी के बाद डी ही क्यों आता है, का मतलब बता पाए, न रोबी ने उसे कभी वैसे याद किया जैसे सब करते हैं।

ए के बाद एस क्यों नहीं आ सकता, बी ही क्यों आता है? इस प्रश्न का कोई सटीक जवाब नहीं है। इस तरह के न जाने कितने प्रश्न कक्षाओं में बच्चे अकसर पूछते हैं। और अकसर ऐसे प्रश्नों को पाठ्यक्रम के बाहर का प्रश्न बताकर बच्चों को चुप करवा दिया जाता है। ऐसा करते हुए हम बच्चों की जिज्ञासा का, उनकी अपनी बात या विचार रखने की क्षमता का भी दमन कर देते हैं। परिणामस्वरूप कुछ समय बाद बच्चा कक्षा में अपनी जिज्ञासा प्रकट करना छोड़ देता है।

मेरा मानना है कि कक्षा शिक्षण में बातचीत के सत्र होने बहुत ज़रूरी हैं ताकि बच्चे शिक्षण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल हो पाएँ। मैंने पाया है कि कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत करने पर बच्चे ख़ुद से ही बताना शुरू कर देते हैं कि उन्हें क्या आता है और क्या नहीं। शुरुआती कक्षाओं में बच्चों के साथ बातचीत के लम्बे सत्रों का आयोजन करने से उनकी समस्याओं के बारे में भी पता चलता है।

बातचीत की शुरुआत

मैंने अपनी कक्षा की समय सारिणी में एक कालांश कहानियों के लिए नियत किया है। इसका नाम है– 'बस एक कहानी'। इस कालांश का मुख्य उद्देश्य बच्चों को कहानी सुनने और उस पर बातचीत करने के पर्याप्त मौक़े देना है। इस कालांश में, मैं प्रतिदिन बच्चों को एक लघु कथा सुनाता हूँ। अपनी तैयारी के लिए मैं लाइब्रेरी की पुस्तकों का सहारा लेता हूँ। यदि कभी कहानी बड़ी होती है तब वह अगले दिन पूरी होती है। कहानी के मध्य में अथवा कहानी पूर्ण होने के उपरान्त मैं कहानी के सन्दर्भ पर आधारित प्रश्नों पर बच्चों से बातचीत करता हूँ। आगे इसके सोपानों पर चर्चा है।

सोपान 1 : कहानी पढ़कर सुनाना

"एक बार एक जंगल में एक बहुत मोटा मुर्ग़ा रहता था। वह हरे रंग का था। वह बहुत झूठ बोलता था और जंगल के सारे जानवरों को झूठ बोल-बोलकर परेशान करता रहता था...।"

सोपान 2 : प्रश्नोत्तरी

सामान्यत: कक्षा शिक्षण के दौरान हम बच्चों को कहानी सुनाकर कहानी-आधारित ऐसे प्रश्न पूछते हैं–

जंगल में कौन रहता था?

वह किस रंग का था?

वह क्या बोलता था?

समस्या की शुरुआत यहीं से हो जाती है। बच्चों से सीधे कहानी-आधारित प्रश्नों को पूछने पर कुछ बच्चे हाथ खड़ा करेंगे, कुछ उनका चेहरा देखेंगे या नज़रें छुपाएँगे, कुछ बच्चे बैठे-बैठे ही जवाब दे देंगे, वहीं जो चुप थे वो चुप ही रहेंगे। मुझे लगता है, प्रश्नों का चयन प्रकरण-आधारित न होकर सन्दर्भ-आधारित होना बेहतर रहता है। इससे सभी बच्चे बातचीत में जुड़ते हैं। मैं कहानियों पर कुछ इस तरह के प्रश्न पूछता हूँ–

एक पक्षी है जो कुकड़ू कू की आवाज़ करता है। आप जानते हैं उसको?

किसी बच्चे के घर में मुर्ग़ा पाला जाता है?

तुम्हारे घर में कौन-कौन से पक्षी और पशु पाले जाते हैं?

मुर्ग़ा कैसी आवाज़ करता है?

गाय, बकरी कैसी आवाज़ करती हैं?

चित्र 2 : सीखे हुए को साझा करने का आत्मविश्वास

बच्चे प्रश्नों के उत्तर देते हैं। कभी-कभी वे ख़ुद भी प्रश्न पूछ लेते हैं, और ऐसा भी होता है कि बच्चों के प्रश्नों से, उत्तरों से नए प्रश्न भी सामने आते हैं।

सोपान 3 : बातचीत के परिणाम

इस तरह की बातचीत के बाद मैं बच्चों से कहानी पर आधारित प्रश्न पूछता हूँ। जैसे–

जंगल में कौन रहता था?

वह कैसा था?

वह क्या बोलता था?

अकसर ज़्यादातर बच्चे उत्तर देते हैं, और यह प्रक्रिया उन्हें रुचिपूर्ण लगती है। बच्चे अपने दैनिक जीवन के अनुभवों और कहानी के अनुभवों में एक सम्बन्ध बनाते हुए सीखते हैं।

चित्र 3 : तरह-तरह की चिट्ठियाँ

बातचीत शुरू करने का एक तरीक़ा यह भी

कक्षा 3 की पुस्तक *हमारा परिवेश* के एक पाठ 'हमारा घर' का शिक्षण करने के दौरान की गई बातचीत।

यह कहानी है जया और जगत के दादी के साथ घूमने की। घूमते हुए जगत हर एक इमारत को घर समझने लगता है। घर और अन्य इमारतों में अन्तर उसे बताया जाता है।

इस प्रकरण पर शिक्षक के रूप में मेरी और बच्चों की बातचीत–

शिक्षक : क्या आपने अस्पताल देखा है?

बच्चे : हाँ, हम सभी ने अस्पताल देखा है।

शिक्षक : आप बताओ, अस्पताल और किसी अन्य इमारत में क्या अन्तर होता है? क्या हम किसी भी इमारत को अस्पताल बोल सकते हैं?

बच्चों ने कोई जवाब नहीं दिया।

तब मैंने सभी से कहा कि आप अपनी आँखें बन्द कर लें, और उस दिन के बारे में सोचना शुरू करें जब कभी आप अस्पताल में गए थे। जैसे–

आप अस्पताल में किस वजह से गए थे?

क्या आप ख़ुद बीमार थे, या किसी अन्य रिश्तेदार को देखने गए थे?

अन्दर आपको कुछ लोग दिखाई दिए होंगे। वे क्या-क्या कर रहे थे?

क्या वहाँ कोई निशान बने हुए थे?

किस तरह के निशान थे?

क्या वहाँ काम करने वाले लोगों की ड्रेस का रंग एक-सा था?

क्या वहाँ कुछ अजीब तरह की गन्ध या दुर्गन्ध आ रही थी?

बच्चों को आँखें बन्द रखते हुए एक-एक करके प्रश्न का उत्तर बताने को कहा। बच्चों ने बहुत सारी बातें बताईं। जैसे– उन्होंने प्लस का निशान देखा। सफ़ेद रंग का कोट पहने लोग देखे। स्टेथोस्कोप, नर्स, कैंची, पट्टी, बहुत सारे बेड, सिरिंज देखीं, अग्निशमन यंत्र देखा। उन्होंने बताया कि वहाँ दवाइयों और फिनाइल की गन्ध आ रही थी।

मैंने उनसे पूछा, "अब आपको समझ आया कि अस्पताल में क्या-क्या होता है?

इसी प्रकार, मैंने उनसे डाकख़ाने के बारे में बातचीत की। हालाँकि डाकख़ाने के बारे में बताने में सबसे बड़ी समस्या यह है कि आज के समय में चिट्ठियों का लिखना और उनका घरों पर आना लगभग समाप्त हो चुका है। फिर भी बातचीत की कोशिश की गई–

शिक्षक : यदि आपको अपने किसी रिश्तेदार को कोई बात बतानी हो तो आप क्या करते हैं?

बच्चे : हम उन्हें फ़ोन से इस बारे में बता देते हैं।

शिक्षक : यदि आपके पास फ़ोन न हो, और रिश्तेदार आपसे दूर रहते हों तब आप क्या करते हैं?

बच्चे : हमारे घर से कोई रिश्तेदार के घर पर उन्हें सूचना देने जाता है।

शिक्षक : यदि रिश्तेदार के घर जाने के लिए कोई व्यक्ति उपलब्ध न हो, या आप वहाँ नहीं जा सकते हों तब आप क्या करेंगे?

बच्चे निरुत्तर थे।

शिक्षक : क्या आपके यहाँ ऑनलाइन सामान आता है?

बच्चे : हाँ! हमारे कुछ रिश्तेदार अपने घर ऑनलाइन सामान मँगाते हैं।

मैंने ऑनलाइन सामान ऑर्डर करने से लेकर सामान घर तक पहुँचने तक की पूरी प्रक्रिया पर उनसे बातचीत की। यह भी

बात हुई कि मोबाइल के आने से पहले लोग टेलीफ़ोन का प्रयोग करते थे, और टेलीफ़ोन से पहले चिट्ठियाँ भेजी जाती थीं। मैंने डाकख़ाने से पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय पत्र, आदि का इन्तज़ाम किया और उन्हें कक्षा में बच्चों के सम्मुख रखा। इससे उन्हें प्रक्रिया समझने में मदद मिली। बच्चों को विद्यालय की मासिक बाल पत्रिकाओं को दिखाया और बात की कि यह पत्रिकाएँ इतनी दूर से किस प्रकार हम तक पहुँचती हैं। उन्हें पुस्तकों, कॉपी और अन्य सामान पर लिखे हुए एड्रेस को दिखाते हुए पते और पिनकोड पर बातचीत की।

> **बच्चे अपने दैनिक जीवन के अनुभवों और कहानी के अनुभवों में सम्बन्ध बनाते हुए सीखते हैं।**

बातचीत का एक और तरीक़ा

एकलव्य पब्लिकेशन द्वारा प्रति माह प्रकाशित की जाने वाली बाल विज्ञान पत्रिका *चकमक* के 'क्यों-क्यों' कॉलम में हर माह एक प्रश्न पूछा जाता है। इस कॉलम के प्रश्न भी कक्षा में बच्चों से बातचीत का एक ज़रिया बने हैं। अभी हाल ही में इस कॉलम में प्रश्न था, "हमें बड़ों की बात माननी चाहिए, वो भी अकसर बिना सवाल किए। क्या तुम्हें भी ऐसा ज़रूरी लगता है? और क्यों? और क्या तुम चाहोगे कि तुम्हारी बात भी लोग बिना सवाल किए मानें? और क्यों?" बच्चों ने इस प्रश्न पर बातचीत की, और फिर अपने उत्तरों को लिखा भी।

कक्षा में बातचीत के फ़ायदे

बातचीत दोतरफ़ा प्रक्रिया है। बच्चों से बात करते हुए बच्चे सीखते हैं और उनके जवाब हमें भी कुछ सिखाते हैं। बच्चों से बातचीत करते हुए मेरी जानकारी भी बहुत बढ़ी है। उनसे मुझे गाँव के परिवेश के बारे में सीखने को मिला है। मुझे फ़सलों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई है। जैसे– उन्हें कितना पानी दिया जाता है, और कब बोया व काटा जाता है। कई सब्ज़ियों व नए-नए व्यंजनों के बारे जानकारी प्राप्त हुई। जैसे– तोरई के फूलों की सब्ज़ी बनती है, यह मेरे लिए आश्चर्य की बात थी। बातचीत कई सम्भावनाओं को खोलती है। इनमें से कुछ हैं–

1. बातचीत में भाग लेते हुए बच्चों को किसी मुद्दे पर आगे खोज करने के लिए प्रोत्साहित महसूस कर सकते हैं।
2. कक्षा के माहौल को उत्साहपूर्ण बनाते हुए, यह बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक है।
3. सभी को अपनी बात रखने के पर्याप्त अवसर प्रदान करती है।
4. अवलोकन करते हुए आकलन करने का अवसर देती है।
5. बार-बार बातचीत से विषय की समझ बेहतर होती है जो अधिगम को स्थाई बनाने में मददगार होती है।
6. यह न्यूनतम अधिगम वाले बच्चों को कक्षा में सहभागिता प्रदान करने का मौक़ा देती है।

बातचीत के दौरान बच्चों को सोचने के पर्याप्त मौक़े मिलते हैं। बातचीत के टॉपिक से अपने-आप को जोड़ने के लिए बच्चों को अपनी पुरानी यादों या अपने किसी जीवन के प्रसंग के बारे में बताना पड़ता है। इस प्रकार, बातचीत में भी बच्चों के कम-से-कम तीन कौशलों-सुनने, बोलने और सोचने-पर कार्य तो होता ही है जोकि सीखने के लिए अति आवश्यक है। हमें यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि बच्चे किसी पाठ या प्रकरण के बारे में क्या सोचते और समझते हैं। और बातचीत इसमें मददगार होती है। शिक्षण के दौरान बातचीत करने से कक्षा में अकसर शान्त रहने वाले या किसी भी गतिविधि में भाग नहीं लेने वाले बच्चों की भी शैक्षणिक एवं ग़ैर-शैक्षणिक प्रगति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

सन्दर्भ

पाठ्यपुस्तक *हमारा परिवेश*, कक्षा 3, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश

अरविन्द कुमार सिंह पिछले 8 वर्षों से उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, ज़िला बुलंदशहर में सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। उनकी कक्षा के विद्यार्थी पिछले दो वर्षों से *उड़ान* नामक दीवार पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं। उनके विद्यालय के विद्यार्थियों के लेख, कविता, कहानी और चित्र बच्चों की पत्रिका *चकमक* में लगातार प्रकाशित हो रहे हैं।

सम्पर्क : arv.kiet2011@gmail.com